

भगवान कल्कि और युगों के बारे में दुर्लभ ज्ञान-Rare knowledge about Lord Kalki and the Yugas

(Source-All this knowledge was given to a person by a saint residing in the forests of Uttarakhand, India, The saint refused to reveal his identity but as per the saint his age was 524 years in 2025. The person even claimed that the saint disappeared after giving this knowledge, even the person whom this knowledge was handed over, wants to remain Anonymous)

भगवान कल्कि के जन्म के समय की ग्रह स्थितियां

धनिष्ठायां विलसिष्यति चन्द्रमाः शुभवर्चसः ।
श्वत्यां प्रभासिष्यते सूर्यः स्फुरिष्यति दिवाकरः ॥
पूर्वाषाढानिविष्टौ तौ भविष्यतः गुरुर्लगाधिपश्च यः ।
तुलायां श्रीनिलये सौरिः केतुरुच्चै वृश्चिके भविष्यति ॥
कलौ क्षीणे जगद्रक्षां कर्तुं धर्मावतारकः ।
जायिष्यते विष्णुनाम्ना सः कल्किरूपधरो हरिः ॥

Hindi Translation

जब चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में शुभ तेज के साथ चमकेगा,
और सूर्य स्वाति नक्षत्र में अपनी प्रभा से दीप्त होगा,
उस समय गुरु और लग्न का स्वामी दोनों पूर्वाषाढा नक्षत्र में स्थित होंगे,
शनि तुला राशि में, लक्ष्मी के निवास स्थान में होगा, और केतु वृश्चिक राशि में उच्च स्थिति में रहेगा।
तब जब कलियुग क्षीण हो जाएगा,
जगत की रक्षा के लिए धर्म का अवतार — भगवान विष्णु —
कल्कि रूप में जन्म लेंगे।

English Translation

When the Moon shall shine in the Dhanishta constellation with auspicious radiance, and the Sun shall glow brightly in the Swati star, then Jupiter and the lord of the ascendant will both be situated in the Purvashadha nakshatra, Saturn shall be in Libra — the abode of Shri (Lakshmi), and Ketu will be exalted in Scorpio. At that time, when Kali Yuga comes to its end, to protect the world, the incarnation of Dharma — Lord Vishnu —shall take birth in the form of Kalki.

पंक्ति 1:

संस्कृतः

धनिष्ठायां विलसिष्यति चन्द्रमाः शुभवर्चसः ।

हिंदी व्याख्या:

जब चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में शुभ तेज के साथ प्रकाशित होगा।

English Explanation:

When the Moon will shine with auspicious brightness in the Dhanishta constellation.

पंक्ति 2:

संस्कृतः

श्वात्यां प्रभासिष्यते सूर्यः स्फुरिष्यति दिवाकरः ॥

हिंदी व्याख्या:

स्वाति नक्षत्र में सूर्य दमकता हुआ अपने तेज से प्रकाशित होगा।

English Explanation:

The Sun, known as the illuminator of the day, will radiate and blaze in the Swati nakshatra.

पंक्ति 3:

संस्कृतः

पूर्वाषाढानिविष्टौ तौ भविष्यतः गुरुर्लगाधिपश्च यः ।

हिंदी व्याख्या:

जब गुरु और लग्नेश दोनों पूर्वाषाढा नक्षत्र में स्थित होंगे।

English Explanation:

When both Jupiter and the lord of the ascendant will be positioned in the Purvashadha nakshatra.

पंक्ति 4:

संस्कृतः

तुलायां श्रीनिलये सौरिः केतुरुच्चे वृश्चिके भविष्यति ॥

हिंदी व्याख्या:

जब शनि तुला राशि में, जो श्री (लक्ष्मी) का निवास स्थान है, स्थित होगा; और केतु वृश्चिक राशि में उच्च का होगा।

English Explanation:

When Saturn will be in Libra, the abode of Shri (Lakshmi), and Ketu will be exalted in Scorpio.

पंक्ति 5:

संस्कृत:

कलौ क्षीणे जगद्रक्षां कर्तुं धर्मावतारकः ।

हिंदी व्याख्या:

जब कलियुग क्षीण हो जाएगा और संसार की रक्षा के लिए धर्म का अवतार होगा।

English Explanation:

When the Kali Yuga declines, to protect the world, an incarnation of Dharma shall appear.

पंक्ति 6:

संस्कृत:

जायिष्यते विष्णुनाम्ना सः कल्किरूपधरो हरिः ॥

हिंदी व्याख्या:

भगवान विष्णु, जो हरि के नाम से जाने जाते हैं, कल्कि रूप में जन्म लेंगे।

English Explanation:

Lord Vishnu, known as Hari, shall be born in the form of Kalki.

चार युगों की अवधि

कलौ युगे पञ्चसहस्रचत्वारिंशद्वर्षाणि सन्त्येव निश्चितानि ।

द्वापरं तस्य द्विगुणं प्रकीर्तं, त्रेता त्रिगुणं च चतुष्गुणं सत्यम् ॥

एतेषां संयोगः पञ्चाशत्सहस्राणि च चतुःशतानि कीर्तितम्।
अयं युगक्रमः सदा निश्चलः स्थिरः च नित्यं प्रवर्तते लोके ॥

हिंदी अनुवादः

कलियुग की अवधि पाँच हजार चालीस वर्ष निश्चित मानी गई है।
द्वापरयुग उसकी दुगुनी अवधि का, त्रेतायुग तीन गुना और सतयुग चार गुना बताया गया है।
इन सभी युगों का कुल योग पचास हजार चार सौ (50400) वर्ष कहा गया है।
यह युग-क्रम सदा अचल, स्थिर और नित्य रूप से संसार में चलता रहता है।

English Translation:

The duration of the Kali Yuga is precisely set at five thousand and forty years.
The Dvapara Yuga is said to be twice that length, the Treta Yuga three times, and the Satya Yuga four times.
The combined span of all these Yugas is described as fifty thousand and four hundred (50400) years.
This cycle of Yugas remains eternally fixed, unchanging, and continuously active in the world.

महायुग की अवधि

यथा अवरोहण-आरोहण-चक्रयोः मिलनं भवति, तथैव महायुगः एकलक्ष-८०० वर्षाणां दीर्घतां यावत् पूर्णः भवति । अत्र द्वौ सत्ययुगौ स्तः, प्रत्येकं २०१६० वर्षस्य – कुलम् ४०३२० वर्षाणि । द्वौ त्रेतायुगौ, प्रत्येकं १५१२० वर्षाणां – कुलम् ३०२४० वर्षाणि । द्वे द्वापरयुगे, प्रत्येकं १००८० वर्षाणां – कुलम् २०१६० वर्षाणि । तथा च द्वौ कलियुगौ, प्रत्येकं ५०४० वर्षाणां – कुलम् १००८० वर्षाणि। एवं अयं महायुगः कुलम् १००८०० वर्षाणि यावत् तिष्ठति, मनुष्यैः कथितं कालचक्रे प्रतिष्ठितम् ।

हिंदी अनुवादः

जैसे अवरोहण (नीचे जाने वाला) और आरोहण (ऊपर चढ़ने वाला) चक्र आपस में मिलते हैं, उसी प्रकार एक महायुग पूर्ण होकर **100800 वर्षों** की अवधि को प्राप्त होता है।
इसमें दो सतयुग होते हैं, प्रत्येक की अवधि **20160 वर्ष** — कुल **40320 वर्ष**।
दो त्रेतायुग होते हैं, प्रत्येक **15120 वर्ष** — कुल **30240 वर्ष**।
दो द्वापरयुग होते हैं, प्रत्येक **10080 वर्ष** — कुल **20160 वर्ष**।
और दो कलियुग होते हैं, प्रत्येक **5040 वर्ष** — कुल **10080 वर्ष**।

इस प्रकार यह महायुग **100800 वर्षों** की कुल अवधि सहित स्थिर रहता है, जो मनुष्यों द्वारा कहा गया है और कालचक्र में स्थापित है।

English Translation:

Just as the descending (Avarohaṇa) and ascending (Ārohaṇa) cycles come together, in the same way, a Mahāyuga is completed with a total span of **100,800 years**.

Within it, there are **two Satya Yugas**, each of **20,160 years**, making a combined total of **40,320 years**.

There are **two Tretā Yugas**, each of **15,120 years**, totaling **30,240 years**.

There are **two Dvāpara Yugas**, each of **10,080 years**, giving a total of **20,160 years**.

And there are **two Kali Yugas**, each lasting **5,040 years**, totaling **10,080 years**.

Thus, this Mahāyuga consists of a grand total of **100,800 years**, as stated by humans and established within the Wheel of Time (*Kālacakra*).

श्री कृष्ण का जन्म और द्वापर युग का अंत

यदा द्वापरियुगस्य अन्ते द्विशतं एकविंशतिवर्षं अवशिष्टम् आसीत् तदा भगवान् श्रीकृष्णः मथुरायां प्रादुर्भूतः।

पुण्यवान् राजा परीक्षितः षष्टिवर्षं यावत् आयुः, तेषु सः चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं पृथिव्यां राज्यं कृतवान् ।

श्रीकृष्णः यदा योगमयद्वारा अस्य जगतः निर्गतवान् तदा तस्य गमनस्य पञ्चनवतिः (९५) वर्षाणाम् अनन्तरं द्वापरयुगस्य समाप्तिः अभवत् ।

यदा च परीक्षितस्य गमनात् एकसप्ततिः (७१) वर्षाणि व्यतीतानि।

अथ द्वापरयुगं समाप्तं कलियुगं च प्रारब्धम् ।

हिंदी अनुवाद (श्लोकानुसार)

जब द्वापरयुग के अंत में दो सौ इक्कीस वर्ष शेष रह गए थे,

तब भगवान् श्रीकृष्ण मथुरा में प्रकट हुए।

पुण्यात्मा राजा परिक्षित ने साठ वर्षों का जीवन पूर्ण किया,

जिसमें से चौबीस वर्षों तक उन्होंने पृथ्वी पर राज्य किया।
जब श्रीकृष्ण योगमाया से इस लोक का त्याग कर गए,
तो उनके जाने के पंचानबे (९५) वर्षों बाद द्वापरयुग समाप्त हुआ।
और जब परिक्षित के जाने के इकहत्तर (७१) वर्ष बीत गए,
तब द्वापरयुग समाप्त हो गया और कलियुग का प्रारंभ हुआ।

English Translation

When only **221 years** remained before the end of the **Dvāpara Yuga**,
at that time, **Lord Śrī Krishna** appeared in **Mathurā**.

The virtuous King **Parīkṣit** lived for **60 years**,
and out of those, he ruled the earth for **24 years**.

When Śrī Krishna departed from this world through **his Yogamāyā**,
95 years after his departure, the **Dvāpara Yuga ended**.

And when **71 years** had passed since the departure of Parīkṣit,
then the **Dvāpara Yuga concluded**, and the **Kali Yuga commenced**.